प्रादर्श प्रश्न पत्र 2012

विषय – हिन्दी विशिष्ट

कक्षा – दसवीं

समय– 3 घंटे **पूर्णांक– 100**

निर्देश–

1. सभी प्रश्न अनिवार्य है।
2. प्रत्येक प्रश्न के लिए आवंटित अंक उनके सामने अंकित है।
3. प्रश्न क्र. 1 से 5 तक वस्तुनिष्ठ प्रश्न दिए है। प्रत्येक प्रश्न के लिए 1 x 5 x 5 = 25 अंक निर्धारित है।
4. प्रश्न क्र. 6 से 15 तक में प्रत्येक का उत्तर लगभग 50 से 75 शब्दों में लिखिए। प्रत्येक प्रश्न हेतु 4 अंक निर्धारित है।
5. प्रश्न क्र. 16 से 20 तक में प्रत्येक का उत्तर 100 से 120 शब्दों में लिखिए। प्रत्येक प्रश्न हेतु 5 अंक निर्धारित है।
6. प्रश्न क्र. 21 का उत्तर लगभग 250/300 शब्दों में लिखिए। इसके लिए 10 अंक निर्धारित है।

प्रश्न 1. निम्नलिखित रिक्त स्थानों की पूर्ति उचित शब्द का चयन कर कीजिए।

(i) सूरदास.....के शिष्य थे।

(वल्लभाचार्य/रामानुजाचार्य)

(ii) रचना की दृष्टि से वाक्य.....प्रकार के होते है।

(तीन/चार)

(iii) जहां पर उपमेय में उपमान का आरोप किया जाता है उसे..... अलंकार कहते है।

(उपमा / रूपक)

(iv) परम्परा बनाम आधुनिकता के लेखक है।

(हजारी प्रसाद द्विवेदी / महावीर प्रसाद द्विवेदी)

(v) .....का स्थान आकाश से भी ऊंचा होता है।

(पिता / भाई)

प्रश्न 2. निम्नलिखित कथनों के लिए सही विकल्प चुनकर लिखिए :–

(अ) इनमें से कौन सा काव्य खंड काव्य नहीं है –

(क) कामायनी (ख) पंचवटी

(ग) सुदामाचरित (ग) रश्मिरथी

(ब) 'काला अक्षर भैंस बराबर' मुहावरे का अर्थ है –

(क) शिक्षित होना (ख) अनपढ़

(ग) भ्रष्ट (घ) रूढ़िवादी

(स) सखी प्रातः काल द्वार पर जाती है –

(क) अवधेश के (ख) वसुदेव के

(ग) देवकी के (घ) शंकर के

(द) 'मैं और मेरा देश' के लेखक है –

(क) कन्हैयालाल मिश्र (ख) धर्मवीर भारती

(ग) सियाराम शरण गुप्त (घ) बालकृष्ण शर्मा नवीन

(इ) नर्मदा के उत्स कुंड से थोड़ा सा ऊपर चलने पर है –

(क) भाई की बगिया (ख) पिता का बाग

(ग) भाई का उपवन (घ) बहन की रसोई

प्रश्न 3. एक वाक्य में उत्तर दीजिए –

1. स्वामी विवेकानन्द से निवेदिता की मुलाकात कहां पर हुई थी?
2. सेठ ज्वाला प्रसाद से मोहन ने क्या उधार लिया था?

3. श्रीकृष्ण के माथे पर लगे टीका की तुलना किससे की गई है?
4. श्याम विद्यालय जाओं वाक्य किस प्रकार का है?
5. जहां पर अप्रस्तुत कथन के द्वारा प्रस्तुत का बोध होता है उसे कौन सा अलंकार कहते है?

प्रश्न 4. निम्नलिखित वाक्यांशों की सही जोड़ी बनाइये–

	क	–	**ख**
1.	समाज सुधारक	–	सच्चा धर्म
2.	ऐतिहासिक पृष्ठ भूमि पर आधारित	–	सुश्रुत
3.	शल्य चिकित्सा	–	आचार्य विश्वनाथ
4.	रसात्मक वाक्यं काव्यम्	–	घनश्याम
5.	कर्मधारय	–	कबीर

प्रश्न 5. निम्नलिखित वाक्यों में सत्य/असत्य बताइये –

1. जन्मदिन पर निर्धनों की सेवा करें इच्छावाचक वाक्य है।
2. साकेत जयंशकर प्रसाद द्वारा रचित महाकाव्य है।
3. मैने आहुति बनकर देखा, निराशावादी कविता है।
4. निन्दा रस व्यंग्य निबंध है।
5. मानव के जीवन में गेहूं और गुलाब का संतुलन आवश्यक है।

प्रश्न 6. जाग तुझकों दूर जाना है महादेवी वर्मा की इस कविता के मूल भाव को चार बिन्दुओं में विस्तार कीजिए।

अथवा

राह चलने से पूर्व बटोही कविता के आधार पर राहगीर को किन चार बातों का ध्यान रखना चाहिए। स्पष्ट कीजिए।

प्रश्न 7. कवि गिरधर के अनुसार बिना विचारे काम करने से होने वाली चार हानियों को लिखिए।

अथवा

कवि तुलसीदास के अनुसार बालक राम के स्वभाव एवं सौंदर्य की कोई चार विशेषताओं को लिखिए।

प्रश्न 8. छायावाद किसे कहते है? इस युग की कोई तीन विशेषताओं को लिखिए।

अथवा

रीतिकाल का नाम रीतिकाल क्यों पड़ा? इस काल की कोई तीन विशेषताएं लिखिए।

प्रश्न 9. 'पहली चूक' श्रीलाल शुक्ल के पाठ के केन्द्रीय भाव को चार बिन्दुओं में विस्तार से लिखिए।

अथवा

गीता में 'पर' की चार विशेषताओं को लिखिए।

प्रश्न 10. निबंध किसे कहते है? द्विवेदी युग की कोई तीन प्रमुख विशेषताओं को लिखिए।

अथवा

जीवनी किसे कहते है? जीवनी और आत्मकथा में कोई दो अंतर स्पष्ट कीजिए।

प्रश्न 11. लेखक ने निन्दकों को पास में रखने की सलाह क्यों दी है? किन्हीं चार कारणों को स्पष्ट कीजिए।

अथवा

'जीवन में बेटियों के महत्व' विषय पर अपने चार प्रमुख विचारों को स्पष्ट कीजिए।

प्रश्न 12. शांत रस की परिभाषा एवं उदाहरण लिखिए।

अथवा

हरिगीतिका की परिभाषा उदाहरण सहित लिखिए।

प्रश्न 13.(अ) बहुब्रीहि समास की परिभाषा लिखकर उदाहरण लिखिए।

(ब) निम्नलिखित मुहावरे का अर्थ लिखकर वाक्य में प्रयोग कीजिए।

1. हथेली पर सरसों जमाना।
2. आंखें फाड़कर देखना।

अथवा

(अ) स्वर संधि किसे कहते है? दो उदाहरण लिखिए।

(ब) निम्नलिखित वाक्यों को निर्देशानुसार परिवर्तित कीजिए।

1. यह पुष्प सुंदर है। (विस्मयादि बोधक वाक्य)
2. वह आगरा जाता है। (प्रश्नवाचक वाक्य)

प्रश्न 14. अज्ञेय अथवा बिहारी की काव्यगत विशेषताएँ निम्न बिन्दुओं के आधार पर लिखिए।

1. दो रचनाएँ
2- भावपक्ष, कला पक्ष,
3. साहित्य में स्थान

प्रश्न 15. प्रेमचन्द अथवा हजारी प्रसाद द्विवेदी का साहित्यिक परिचय निम्न बिंदुओं के आधार पर लिखिए :–

1. दो रचनाएँ,
2. भाषा शैली
3. साहित्य में स्थान

प्रश्न 16. निम्नलिखित में से किसी एक पद्यांश की संदर्भ एवं प्रसंग सहित व्याख्या कीजिए :–

माथे की श्रम बूंदां को,
खेत में पहुंचकर मजदूर ने बो दिया।
लहलहाती फसल जब तैयार हुई,
उन हरे–भरे दानों को किसी और ने,
तिजोरी के लिए बटोर लिया,
इसलिए आक्रोश में आकर,
मजदूर सूरज को निगल गया।

अथवा

अवगति गति कछु कहत न आवै।
ज्यौं गूंगेहि मीठे फल को रस अंतरगत ही भावै।
परम स्वाद सबही सुनिरंतर अमिततोष उपजावै।
मन–वानी कौं अगम–अगोचर, सो जानै जो पावै।
रूप–रेख–गुण–जाति जुगति बिनु, निरालंब मन चक्रत धावै।
सब विधि अगम बिचारहिं तातै, सूर सगुनलीला पद गावै।

प्रश्न 17. निम्न लिखित में से किसी एक गद्यांश की संदर्भ प्रसंग सहित व्याख्या कीजिएः–

कोई भी आधुनिक विचार आसमान से नहीं पैदा होता है। सबकी जड़ परंपरा में गहराई तक गई हुई है। सुंदर से सुंदर फूल यह दावा नहीं कर सकता कि वह पेड़ से भिन्न होने के कारण उससे एकदम अलग है। कोई भी पेड़ यह दावा नहीं कर सकता कि वह मिट्टी से भिन्न होने के कारण उससे एकदम अलग है। इसी प्रकार कोई भी आधुनिक विचार यह दावा नहीं कर सकता कि वह परंपरा से कटा हुआ है। कार्य कारण के रूप में, आधार आधेय के रूप में

परंपरा की एक अविच्छेदय श्रृंखला अतीत में गहराई तक बहुत गहराई तक गई हुई है।

अथवा

कम से कम तुम सदृश सत्यवादी व्यक्ति के लिए तो ऐसे प्रश्नों में असाधारणता नहीं होनी चाहिए। जन्म भर तुम्हारा सत्यव्रत अटल रहा। तुम सदा कहते रहे हो कि जीवन में यदि मनुष्य एक सत्य का आश्रय लिए रहे तो वह सत्य स्वयं ही सारे प्रश्नों का निराकरण कर देता है पर जब मनुष्य सत्य का आश्रय छोड़ मिथ्या का आसरा लेता है, तभी तरह–तरह के प्रश्न उठ खड़े होते है।

प्रश्न 18. निम्नलिखित अपठित गद्यांश को पढ़कर नीचे लिखे प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

मनुष्य के लिये प्रतिभा नहीं, उद्‌देश्य आवश्यक है, विश्वास जानिए, आंख मीचकर फेंका हुआ तीर अपना लक्ष्य नहीं बेध सकता। भला आप उस व्यक्ति के बारे में क्या सोचेंगे जो गाड़ी में सवार होने के लिए स्टेशन पर पहुंचा हुआ है पर जिसे यह नहीं मालुम कि उसे कहां जाना है? हम सब भी विश्व के रंगमंच पर आए हुए है। जीवन की नौका को संसार में खेने से पूर्व हमें जान लेना चाहिए कि हमें जाना कहां है? अतः हम अपनी इन बन्द आंखों को खोल लें, उद्‌देश्य बनाएं और चल पड़े। जिस नाविक ने लक्ष्य स्थिर नहीं किया, उसके अनुकूल हवा कभी नहीं चलेगी।

प्रश्न 1. उपर्युक्त गद्यांश का उपर्युक्त शीर्षक लिखिए।

2. मनुष्य के लिए जीवन में क्या आवश्यक है?

3. हवा के पर्यायवाची शब्द लिखिए।

4. उपर्युक्त गद्यांश का सार लिखिए।

प्रश्न 19. अपने मित्र को हाईस्कूल परीक्षा में प्रथम आने पर बधाई पत्र लिखिए।

अथवा

नगर निगम अध्यक्ष, भोपाल को एक पत्र लिखिए जिसमें मोहल्ले की सफाई न होने की शिकायत की गई हो।

प्रश्न 20. निम्न लिखित में से किसी एक विषय पर लगभग 250 शब्दों में निबंध लिखिए?

1. आधुनिक भारत में भारतीय नारी।
2. मेरी कल्पना का भारत।
3. वन महोत्सव।
4. संचार के नए–नए साधन।
5. भारतीय समाज में नारी का स्थान।

– – – – – –

आदर्श उत्तर

हिन्दी विशिष्ट

कक्षा–X

उत्तर 1. रिक्त स्थान की पूर्ति – 5 अंक

(i) वल्लभाचार्य

(ii) तीन

(iii) रूपक

(iv) हजारी प्रसाद द्विवेदी

(v) पिता

उत्तर 2. सही विकल्प का चयन :– 5 अंक

1. कामायनी
2. अनपढ़
3. अवधेश के
4. कन्हैयालाल मिश्र
5. भाई की बगिया

उत्तर 3. एक वाक्य में उत्तर दीजिए – 5 अंक

1. 1893 में शिकागों में
2. ऋण
3. रवि से
4. आज्ञावाचक
5. अन्योक्ति

उत्तर 4. सही जोडियां बनाइयें – 5 अंक

क		ख
1. समाज सुधारक	–	कबीर
2. ऐतिहासिक पृष्ठ भूमि पर आधारित	–	सच्चा धर्म
3. शल्य चिकित्सा	–	सुश्रुत
4. रसात्मक वाक्यं काव्यम्	–	आचार्य विश्वनाथ
5. कर्मधारय	–	घनश्याम

उत्तर 5. सत्य/असत्य का चयन – 5 अंक

1. असत्य
2. असत्य
3. असत्य
4. सत्य
5. सत्य

उत्तर 6. कवयित्री महादेवी वर्मा कह रही है कि,

1. निश्चल हिमालय में भले ही कम्पन हो जाए।
2. प्रलय काल की वर्षा से संसार जल मग्न हो जाए।
3. बिजली गिरकर भस्मसात कर दे।
4. तुफान आ जावें

अपनी साधना से डिगना नहीं है तुम जागते रहो क्योंकि तुम्हें अभी लम्बी यात्रा तय करनी है।

4 अंक

अथवा

1. बाट की पहचान कर लेना चाहिए।
2. पूर्वजों के पदचिन्ह है जिनका अनुकरण करना है।

3. विश्वास के साथ पग बंटाता है।
4. रास्ते में कांटे ही कांटे बिखरे हुए है, हमें संभलकर चलना है।
5. आंखें भले ही स्वर्ग पर लगी हो किन्तु पैर यथार्थ के धरातल पर ही हो।

उत्तर 7. बिना विचारे काम करने से निम्न हानियां होती है।

1. बिना विचारे काम करने से अंत में पछताना पड़ता है।
2. काम बिगड़ जाता है।
3. जग में हंसी होती है।
4. संसार में उठना बैठना खाना–पीना आदर सम्मान सब दूभर हो जाता है।

4 अंक

अथवा

1. बालक राम चन्द्रमा लेने की हठ करते है।
2. दूसरी ओर स्वयं की परछाई देखकर डर जाते है।
3. राम की आंखे खंजन पक्षी के बच्चे के समान सुंदर थी।
4. दांत बिजली की चमक के समान सुंदर थे।

उत्तर 8. छायावाद में स्वछंद प्रेमभावना, प्रकृति में मानवीय क्रियाकलापों तथा भाव व्यापारों का आरोपण है। प्रकृति में पर चेतना का आरोप छायावाद है। डॉ. नागेन्द्र ने स्थूल के प्रति सूक्ष्म के विद्रोह को छायावाद कहा है।

छायावाद की विशेषताएं –

1. छायावाद में सूक्ष्म भावनाओं एवं काल्पनिक विचारों को अभिव्यक्ति मिली है।
2. सौन्दर्य, प्रेम और श्रंगार इस काव्य के प्रमुख विषय रहे।
3. यह काव्य जीवन की यथार्थता और वास्तविक संघर्ष से दूर रहा।
4. इस काव्य में प्रकृति का मानवीकरण किया गया।

4 अंक

अथवा

रीतिकाल का नाम रीतिकाल इसलिए पड़ा क्योंकि इस काल में जो रचनाएं लिखी गई है वे लक्षणों को ध्यान में रखकर लिखी गई थी। अर्थात् छंद, अलंकार, नायिका भेद संबंधी काव्य लक्षणों को ध्यान में रखकर अधिकांश रचनाएं लिखी गई है।

रीतिकाल की विशेषताएं –

1. आचार्यत्व प्रदर्शन की प्रवृत्ति
2. श्रृंगार प्रियता
3. अलंकार प्रियता
4. कलापक्ष की प्रधानता

4 अंक

उत्तर 9.

1. पहली चूक व्यंग्य धारा है शिक्षित जनों को केन्द्र बिन्दु बनाया है जो शहर में निवास कहते है।
2. वे ग्रामीण वातावरण से पूरी तरह अनभिज्ञ रहते है।
3. पुस्तकों एवं चलचित्रों के आधार पर मानस में काल्पनिक ग्राम का सृजन करते है।
4. वह कल्पना खण्ड–विखण्ड हो जाती है जब ग्राम जीवन की यथार्थ स्थिति का बोध होता है।

अथवा

1. पर का अर्थ परमात्मा है सब विश्व परमात्मा ही है, (गीता कहती है)।
2. ईश्वर और विश्व अभिन्न है।
3. सबके प्रति सेवाभाव रखो।
4. इन्द्रियों के भोगों को नियंत्रित रखो।
5. उन्हें स्वछंद और निरंकुश नहीं छोड़ देना चाहिए।

उत्तर 10. निबंध शब्द दो शब्दों से मिलकर बना है। नि+बन्ध अर्थात अच्छी तरह बंधी हुई परिमार्जित प्रौढ़ रचना किसी विषय का भलीभांति प्रतिपादन करना या परीक्षण करना निबंध कहलाता है।

1. हिन्दी का परिमार्जित एवं परिष्कृत रूप।
2. इस युग में ज्ञान विज्ञान से संबंधित उच्चस्तरीय निबंधों की रचना की गई।
3. निबंधों में गंभीरता, बौद्धिकता तथा विश्लेषणात्मक पायी जाती है।
4. निबंध रचना की विविध शैलियों का प्रयोग किया गया।

4 अंक

अथवा

जीवनी किसी व्यक्ति विशेष के जीवन और चरित्र की रसात्मक अभिव्यक्ति है। लेखक किसी महापुरूष के व्यक्तित्व, कृतित्व तथा उसकी उपलब्धियों का वर्णन करता है।

1. जीवनी किसी दूसरे के द्वारा लिखी जाती है, जबकि आत्मकथा व्यक्ति स्वयं के द्वारा लिखी जाती है।
2. जीवनी में दूसरे के गुण दोषों का विवेचन होता है, जबकि आत्मकथा में लेखक स्वयं के गुण दोषों का विवेचन करता है।

उत्तर 11. लेखक ने निन्दकों को पास में रखने की सलाह इसलिए दी है क्योंकि निन्दक,

1. व्यक्तित्व की कमी को उजागर करता है।
2. निष्पक्षता का भाव रहता है।
3. निन्दकों में एकाग्रता पाई जाती है।
4. बिना पानी और साबुन के स्वभाव निर्मल कर देते है।
5. निमग्नता पाई जाती है।

5 अंक

अथवा

1. बेटियां घर की रौनक है।

2. बेटियां ही घर की संचालन शक्ति है।
3. मां बहन एवं पत्नी के रूप में इसका सर्वांग जीवन त्याग एवं तपस्या की प्रतिमूर्ति है।
4. बेटियां ही मनुष्य को नैतिकता का पाठ पढ़ाती है।

उत्तर 12. सहृदय के हृदय में स्थित निर्वेद नामक स्थायी भाव का जब विभाव अनुभाव और संचारी भाव से संयोग हो जाता है तो वह निर्वेद शांत रस का रूप ग्रहण कर लेता है।

उदाहरणः– मन रे! परस हरि के चरण
सुभग सीतल कमल कोमल
त्रिविध ज्वाला हरण।

5 अंक

अथवा

यह सम मात्रिक छंद है। इसके प्रत्येक चरण में 16–12 की यति के साथ 28 मात्राएं होती है। प्रत्येक चरण के अंत में लघु गुरू होता है।

उदाहरण – वह सनेह की मूर्ति दयामयि,
माता तुल्य महीं है।
उसके प्रति कर्त्तव्य तुम्हारा
क्या कुछ शेष नहीं है
हाथ पकड़ कर प्रथम जिन्होंने,
चलना तुम्हें सिखाया।
भाषा सिखा हृदय का अद्‌भुत,
रूप स्वरूप दिखाया।

उत्तर 13. (अ) जिस समास में आये हुए पदों के अर्थों को छोड़कर किसी अन्य पद के अर्थ की प्रधानता हो वहां बहुब्रीहि समास होता है।

1. लम्बोदर
2. पीताम्बर धारी

(ब) मुहावरें

1. असंभव कार्य करने की कोशिश करना।

   प्रयोग– अक्षिता हिमालय पर चढ़ने की सोच रही थी यह तो हथेली पर सरसों जमाने का कार्य हुआ।

2. आश्चर्य से देखना।

   प्रयोग– विदेशी लोग भारत आगरा के ताजमहल को आंखे फाड़कर देख रहे थे।

5 अंक

अथवा

(अ) दो स्वरों के मेल सेजो परिवर्तन होता है उसे स्वर संधि कहतेहै।

उदाहरण– भोजनालय, मतानुसार, कपीश, रवीन्द्र।

(ब) निर्देशानुसार वाक्य –

1. अहा! यह पुष्प सुंदर है।
2. क्या वह आगरा जाता है?

उत्तर 14. साहित्य परिचय– **अज्ञेय**

1. **रचनाएंः–** हरीघास पर क्षण भर बावरा अहेरी, भग्नदूत, चिन्ता।
2. **भाव पक्षः–** अज्ञेय जी की कविताओं में गहरी अनुभूति तथा कल्पना की उंची उड़ान का सुंदर समन्वय हुआ है। एक नवीन काव्य धारा का प्रवर्तन हुआ। उनकी निजी अनुभूतियां प्रयोगवादी कविता के रूप में प्रकट हुई। उनकी कविताओं में प्रकृति चित्रण एवं प्रेमनिरूपण है। व्यक्तिगत भावनाओं का चित्रण है। बौद्धिकता की अधिकता।

3. **कला पक्षः–** अज्ञेय जी की भाषा खड़ी बोली है एवं विषय के अनुसार भाषा में प्रभावोत्पादकता है। भाषा में नूतनता, लाक्षणिकता तथा प्रतीकात्मकता के गुण विद्यमान है। कहीं देशज शब्दों का भी प्रयोग किया गया है।
4. **साहित्य में स्थानः–** अज्ञेय जी बहुमुखी प्रतिभा के धनी कवि थे। कवि ने काव्य को नवीनता प्रदान की। वे मानवतावादी कवि है। साहित्य सेवी अज्ञेय जी का हिन्दी जगत में विशिष्ट स्थान है।

5 अंक

अथवा

साहित्य परिचय– **बिहारी**

1. **रचनाएंः–** बिहारी की प्रमुख रचना बिहारी सतसई।
2. **भाव पक्षः–** सतसई में भक्ति, दर्शन, नीति, लोकव्यवहार, ज्योतिष आदि के दोहे संकलित है इसमें इनकी ज्ञान गरिमा का पता चलता है। इसमें प्रेम, सौंदर्य और भक्ति की प्रमुखता है। यह श्रृंगार रस का अथाह सागर है।
3. **कला पक्षः–** कम से कम शब्दों में अधिक से अधिक मर्मस्पर्शी अर्थ की अभिव्यक्ति आपकी प्रमुख विशेषता है।
4. **साहित्य में स्थानः–** रीतिकालीन रीति सिद्ध और रससिद्ध कवियों में बिहारी का स्थान सर्वोपरि है। श्रृंगार रस के ग्रंथों में बिहारी को विशेष ख्याति मिली है।

उत्तर 15. साहित्य परिचय– **प्रेमचन्द्र**

1. **रचनाएं :–** गोदान, गबन, निर्मल, प्रेमाश्रम, कर्मभूमि, रंगभूमि।
2. **भाषा शैली :–** प्रेमचन्द्र की भाषा हिन्दी तथा उर्दू मिश्रित है। मुहावरे तथा कहावतों के प्रयोग से भाषा में विशिष्टता आ गयी है। परिचयात्मक, विचारात्मक, भावात्मक, विश्लेषणात्मक तथा अभिनयात्मक शैलियों को अपनाया है। उनकी शैली हिन्दी उर्दू भाषा की मिश्रित शैली है।

3. **साहित्य में स्थान :–** हिन्दी साहित्य में उपन्यास सम्राट के नाम से जाने जाते है।

5 अंक

अथवा

साहित्य परिचय– **हजारी प्रसाद द्विवेदी**

1. **रचनाएंः–** बाण भट्ट की आत्मकथा, चारू चन्द्र लेखा, पुनर्नवा, अनामदास का पोथा, अशोक के फूल, कुटज, विचार और वितर्क, आलोक पर्व।
2. **भाषा शैलीः–** द्विवेदी जी की भाषा संस्कृत निष्ठ खड़ी बोली है। इसमें सरलता, गंभीरता विनोद प्रियता और विद्वता का अभूतपूर्ण समन्वय देखने को मिलता है। आप छोटे–छोटे सरल वाक्यों में गंभीर बात कह जाते है।
3. **साहित्य में स्थानः–** हिन्दी साहित्य में आप सांस्कृतिक एवं ऐतिहासिक निबंधकार के रूप में प्रतिष्ठित है।

उत्तर 16. पद्यांश की व्याख्या

संदर्भ :– प्रस्तुत कविता विविधा के अन्तर्गत 'तृप्ति नाम से संगृहीत है। अप्रवासी भारतीय अभिमन्यु अनंत इनके रचयिता है।

प्रसंग :– प्रस्तुत कविता में वर्गभेद एवं पूंजीवादी सभ्यता को उजागर किया है।

व्याख्या :– कवि कहता है कि किसान अपने खेतों को पसीने से सींचकर बीज बोता है। इसका अथक परिश्रम लहलहाती फसलों में दिखाई देता है। पूंजीपतियों की तिजोरी में फसल का दाना चला जाता है जो असली हकदार है उसे कुछ नहीं मिलता वह खाली हाथ ही रह जाता है। इसीलिए किसान ने क्रोधित होकर सूर्य को निगल लिया। वर्तमान में सूर्य की प्रखरता उसके व्यवहार में प्रगट हो रही है।

विशेषः–

1. भाषा–खड़ी बोली।
2. मानवीय श्रम के शोषण की चर्चा की है।

5 अंक

अथवा

पद्यांश की व्याख्या

संदर्भ :– प्रस्तुत पंक्तियां भक्तिकाल के कृष्णाश्रयी शाखा के प्रमुख कवि सूरदास द्वारा रचित विनय के पद से उद्धृत है।

प्रसंग :– निर्गुण ब्रह्म की अपेक्षा सगुण ब्रह्ह उसी की लीला का गान करते है।

व्याख्या :– कवि सूरदास कहते है कि निर्गुण ब्रह्म अविज्ञेय है। उसके संबंध में कुछ कहा नहीं जा सकता। वेद पुराण भी उसे नेति–नेति कहकर ही पुकारते है। जैसे गूंगे को मीठा फल खाने के लिए दिया जावें और उससे उसका स्वाद पूछ जाए तो वह उसे बता नहीं सकता, उसके स्वाद को भीतर ही भीतर अनुभव करता है। उसे परमानंद तो प्राप्त हो सकता है परंतु वह गूंगे की तरह किसी को बता नहीं सकता। वह ब्रह्म मन वाणी से अगोचर एवं अनिवर्चनीय है उसको तो वही जान सकता है, जो उसे प्राप्त कर लेता है। निर्गुण ब्रह्म का न रूप है न रंग, वह गुणातीत है। इन्हीं सब कारणों से मैने सगुण ब्रह्म श्रीकृष्ण की लीला का गान किया है।

विशेष :–

1. सगुण बह्म की उपासना को सहज बताया है।
2. पद में संगीतात्मकता एवं गेय है।
3. शांत रस है।
4. अत्प्रेक्षा अलंकार है।
5. प्रसाद गुण है।
6. भाषा– ब्रज भाषा है।

उत्तर 17. गद्यांश की व्याख्या

संदर्भ :– प्रस्तुत गद्यांश परम्परा बनाम आधुनिकता से उद्धृत है। जिसके रचयिता आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी है।

प्रसंग :– लेखक ने परम्परा एवं आधुनिकता के अन्तर्सम्बंध को स्पष्ट किया है।

व्याख्या :– लेखक कहता है कि नवीन विचारों का कुछ न कुछ आधार रहता है। विचार का स्त्रोत परम्परा के आस–पास ही रहता है। लेखक ने दृयत्रंत के माध्यम से आधुनिकता एवं परम्परा को समझाते हुए कहा है कि कोई भी फूल क्या कह सकता है कि वह बिना पेड़ के उत्पन्न हुआ है। यह पेड़ परम्परा है फूल आधुनिकता है। क्या पेड़ ही यह दावा कर सकता है कि मिट्टी से उसका संबंध नहीं है परम्परा की जड़ बहुत गहरी होती है।

विशेषः–

1. संस्कृत निष्ठ भाषा।
2. विश्लेषणात्मक शैली।
3. दृयत्रंत द्वारा स्पष्टीकरण

5 अंक

अथवा

गद्यांश की व्याख्या

संदर्भ :– प्रस्तुत गद्यांश 'सच्चा धर्म. एकांकी से उद्धृत किया गया है जिसके लेखक सेठ गोविन्ददास है।

प्रसंग :– सच्चा धर्म एकांकी की पात्रा 'अहिल्या' अपने पति पुरूषोत्तम को सत्य पथ पर अडिग रहने को कह रही है।

व्याख्या :– लेखक कहते है कि अहिल्या अपने पति से कहती है कि तुम हमेशा से सत्य बोलने के लिए जाने जाते हो। सत्य बोलने में कोई दुविधा नहीं होनी चाहिए। सत्य पथ पर तुम जीवन भर अडिग रहे। जीवन में जो सत्याचरण करता है उसके सम्मुख दुविधा और प्रश्न उपस्थित ही नहीं होते प्रश्न तो जब उपस्थित होते है, जब मनुष्य झूठ का सहारा लेने के विकल्प का विचार करने लगता है।

विशेष :–

1. गांधीवादी दर्शन का प्रतिपादन है।

2. सत्य बोलने के लिए कहा गया है।
3. भाषा संस्कृतनिष्ठ है।
4. विवरणात्मक शैली है।

उत्तर 18. अपठित गद्यांश

1. शीर्षक– मनुष्य का उद्देश्य।
2. मनुष्य के लिए जीवन में उद्देश्य का होना आवश्यक है।
3. समीर, पवन, अनिल।
4. मनुष्य को सबसे पहले उद्देश्य बना लेना चाहिए कि हमें जाना कहां है। आंख बंद कर के नहीं चलना है पहले उद्देश्य निश्चित कर ले फिर उसी ओर चल पड़े तो सफलता मिलेगी।

उत्तर 19.

26, मल्हार गंज, उज्जैन

दिनांक.....

प्रिय विपिन,

मुझे यह जानकर प्रसन्नता हुई कि तुमने हाईस्कूल परीक्षा में प्रथम श्रेणी उत्तीर्ण होकर संस्था में प्रथम स्थान प्राप्त किया है। तुम्हारी इस शानदार सफलता पर मैं तुम्हें हार्दिक बधाई देता हूँ और आशा करता हूँ कि आगामी परीक्षाओं में भी तुम्हें ऐसी ही सफलता मिलती रहेगी। मेरी शुभकामनाएं तुम्हारे साथ है।

आरदणीय पिताजी तथा माताजी को मेरा प्रणाम, छोटों को स्नेह।

तुम्हारा मित्र

रमण

अथवा

प्रति,

श्रीमान नगर पालिका अधिकारी

नगर निगम, भोपाल

विषयः– मयूर विहार कॉलोनी की सफाई के संबंध में।

महोदय,

विषयान्तर्गत निवेदन है कि मयूर विहार कॉलोनी वार्ड क्र. 14 में बहुत गंदगी हो गई। जिसे कई महिनों से साफ नहीं किया है। जिसके कारण से अनेक कीटनाशक जीवाणु उत्पन्न हो रहे एवं बिमारी फैल रही है। रास्ते पर अनेक जगह कचरा जमा है जिसमें बहुत गंदगी है।

अतः महोदय जी से पुनः नम्र निवेदन है उक्त कॉलोनी में सफाई करवाने की महती कृपा करेंगे।

दिनांक

भवदीय

समस्त कॉलोनी वासी

(1+3+2 = 5 अंक)

उत्तर 20. **निबंध लेखन–**

आधुनिक भारत में भारतीय नारी

''मैं कवि की कविता कामिनी हूँ, मै चित्रकार का रूचिर चित्र।

मै जगत नाट्य की रसाधार, अभिलाषा मानव की विचित्र।।

1. प्रस्तावना
2. प्राचीन भारतीय नारी
3. मध्यकाल में नारी की स्थिति
4. आधुनिक नारी
4. उपसंहार

प्रस्तावना – ब्रम्हा के पश्चात इस भूतल पर मानव को अवतरित करने वाली नारी का स्थान सर्वोपरि है। मां, बहन, पुत्री एवं पत्नी रूपो में वह देवी है। वही मानव समाज से संबंध स्थापित करने वाली है। किन्तु दुर्भाग्य यह रहा है कि इस जगत को समुचित स्थान न देकर पुरूष ने प्रारंभ से अपने वशीभूत रखने का प्रयत्न किया है।

प्राचीन भारत में नारी – प्राचीन काल में नारी की स्थिति अच्छी थी, वैदिक काल में नारी का सम्मानजनक स्थान था। रोमसा, लोपायुद्रा आदि नारियों ने ऋग्वेद के सूत्रों को रचाा तो कैकयी, मन्दोदरी आदि की वीरता एवं विवेकशीलता व्याख्यात है। सीता, अनुसुइया, सुलोचना आदि के आदर्शें को आज भी स्वीकार किया जाता है। महाभारत काल की गांधारी, कुन्ती, द्रोपदी के महत्व को भुलाया नहीं जा सकता है उस काल में नारी बन्दनीय रही।

''यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तग देवता।''

मध्यकाल में नारी की स्थिति – मध्यकाल नारी के लिए अभिशाप बनकर आया। मुगलों के आक्रमण के फलस्वरूप नारी की करूण कहानी का आरंभ हुआ। मुगल शासकों की कामुकता ने उसे भोग की वस्तु बना दिया। वह घर की सीमाओं में ही बंदी बनकर रह गई थी वह पुरूष पर आश्रित होकर अबला बन गई थी।

''अबला जीवन हाय, तुम्हारी यही कहानी।
आंचल में है दूध, और आंखों में पानी।।

भक्तिकाल में भी नारी को समुचित स्थान नहीं मिल सका। सीता, राधा आदि के आदर्श रूपों के अतिरिक्त नारियों को कबीर, तुलसी आदि कवियों ने नागिन, भस्म करने वाली तथा पतन की ओर ले जाने वाली माना।

रीतिकाल में तो वह पुरूषों के हाथों का खिलौना बनकर रह गई।

आधुनिक नारी – आधुनिक काल में नारी चेतना तथा नारी उद्धार का काल रहा है। राजा राम मोहन राय महर्षि दयानन्द महात्मा गांधी आदि ने नारी को

गरिमामय बनाया है। पंत के शब्दों में जनमन ने कहा– ''मुक्त करो नारी को मानव चिरबंदनीय नारी को युग युग की निर्मम कारा से जननी सखि, प्यारी''। वस्तुतः स्त्री तथा पुरूष जीवन रथ के दो पहिये है। नारी तथा पुरूष का एकत्व सार्थक मानव जीवन का आदर्श है। अतः उसे बन्दनीय मामना भूल है।

उपसंहार – आज नारी पराधीनता से मुक्त होकर पुनः अपनी प्रतिष्ठा एवं गरिमा को प्राप्त कर रही है। पाश्चात्य के प्रभाव के कारण नारी समाज के एक वर्ग में विलासित की भावना अवश्य बढ़ रही है, किन्तु वह दिन दूर नहीं जब वह सद्मार्ग पर आ जाएगी। वह अपने रूप का वरण करेगी। वस्तुतः नारी मानवता की प्रतिमूर्ति है।

''मानवता की मूर्तिवतीतू, भव्य भाव–भूषण भण्डार।
गया क्षमा ममता की आकर, विश्व प्रेम की है आधार।।''

10 अंक

(नोटः– छात्र निबंध लेखन में मौलिकता एवं भाषा का विशेष ध्यान रखें पाठ्येत्तर अध्ययन उत्कृष्ट निबंध लेखन में मार्ग दर्शक होगा)

– – – – – –